A B S K M

AKHIL BHARTIYA SANGEET KALA MAHAVIDHYALAY DELHI

KATHAK DANCE

ABOUT KATHAK DANCE

Kathak is one of the most prominent and ancient classical dance forms of India, which originated in the northern regions of India. The word Kathak is derived from the Sanskrit word "Katha", meaning story. Traditionally, Kathak dancers were storytellers who used dance, expressions, music, and gestures to narrate mythological and cultural stories.

Kathak is a beautiful combination of Nritya (expressive dance), Nritta (pure dance), and Natya (dramatic presentation). Its unique techniques include Tatkar (footwork), Chakkars (spins), Hastak (hand movements), Abhinaya (expressions), Tala (rhythm), Laya (tempo), and Bhava (emotional expression). Through graceful movements, facial expressions, and rhythmic patterns, Kathak presents various emotions, stories, and artistic themes.

Regular practice of Kathak helps dancers develop rhythm sense, flexibility, balance, concentration, confidence, discipline, and stage performance skills. The dance form emphasizes precise footwork, elegant body movements, and coordination with classical music instruments like Tabla, Harmonium, and Pakhawaj.

Kathak is not only a performing art but also an important medium to represent Indian culture, traditions, and heritage. It beautifully portrays stories of devotion, mythology, love, and human emotions through expressive movements and graceful performances. It is widely performed in stage shows, cultural programs, competitions, and traditional events.

Today, Kathak is admired not only in India but across the world. It continues to preserve its traditional values while embracing modern creativity. Kathak provides artists with a wonderful platform to showcase their talent, imagination, storytelling ability, and emotional expression.

षड़जा (FIRST YEAR) (FULL MARKS- 50)

- तीनताल 4 सरल ततकार हस्तक सहित (ठाह, दुगुन और चौगुन की लयो में) 1 ठाट, 1 सलामी, 1 आमद, 5 साधारण तोड़ें तथा 2 तिहाईयां।
- दादरा और कहरवा तालों में 2 आधुनिक छोटे नृत्य।
- तीनताल, झपताल, दादरा, कहरवा तालों के ठे कों को हाथ से ताली- खाली देते हुए ठाह और दुगुन में पढने का अभ्यास।
- ततकार तथा तोडो को हाथ से ताली देकर ठाह तथा दुगुन में बोलना।

ऋषभा (SECOND YEAR) (FULL MARKS - 100)

- तीनताल में चार अन्य कठिन ततकार हस्तक सहित, 2 ठाट, 1 सलामी, 5 कठिन तोड़े, 1 चक्करदार तोड़ा, 2 सरल गतभाव तथा 2 अच्छी
- तिहाईयां।
- झपताल में 2 ततकार, 1 ठाट, 1 सलामी, 5 सरल तोड़े तथा 2 तिहाईयां।
- दादरा और कहरवा तालों में लोक नृत्य।
- एकताल तथा सूलताल के ठे कों की ठाह, दुगुन व चौगुन हाथ पर ताली देकर बोलना।
- ततकार तथा तोड़ो को हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन और चौगुन लयों में बोलना।

गंधर्व (THIRD YEAR) (FULL MARKS -125) (PRACTICAL MARKS-75)

- तीनताल में 2 कठिन ततकार हस्तकों सहित, पिछले पाठ्यक्रम में दिये गये ठाटों के अतिरिक्त 2 नये ठाट, 1 आमद, 1 सलामी, 5
- कठिन तोड़े, 1 परन तथा 1 चक्करदार परन। ततकार को पैर से ठाह, दुगुन, तिगुन तथा चौगुन लयों में निकालना तथा हाथ से ताली देकर
- बोलने का अभ्यास।
- झपताल में 2 नये ततकार पलटो और हस्तकों सहित, 1 चक्करदार तोड़े, 2 कठिन तोड़े तथा 2 तिहाईयां।
- एकताल में 2 ठाट, 1 सलामी, 1 आमद, 4 ततकार हस्तक सहित, 4 तोड़े तथा 2 तिहाईयां।
- सूलताल में 2 ततकार तथा 2तोड़े।
- तीनताल में 2 घूघँट का गतभाव।
- तेवरा, चारताल, सूलताल, तथा धमार तालों को ठाह, दुगुन तथा चौगुन लयों में हाथ से ताली देकर बोलना तथा पैर से इन ठे कों के
- ततकार को इन्हीं तीन लयों में निकालना।
- दो विशेष लोक नृत्य ।

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 50)

- निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान
  (अ) परन, चक्करदार परन, मुष्टि, पताका, त्रिपताका, मुकु टकरण, रेचक, अंगहार, उपांग तथा पलटा।
  (ब) ध्वनि की उत्पत्ति, कं पन, आंदोलन, नाद की विशेताए, नाद स्थान, स्वर, चल और अचल स्वर, शुद्ध तथा विकृ त स्वर, सप्तक (मन्द्र, मध्य और तार)।
- लखनऊ और जयपुर घरानों का संक्षिप्त इतिहास।
- अच्छन महाराज तथा जयलाल का संक्षिप्त जीवन परिचय।
- भातखंडे तथा विष्णु दिम्बर ताललिपि पद्धति का ज्ञान।
- तेवरा, चारताल, आड़ा चारताल तथा धमार तालों का पूर्ण परिचय।
- भारतीय संगीत में नृत्य का स्थान।
- तबला तथा पखावज का पुर्ण परिचय।

मध्यमा (FOURTH YEAR) (FULL MARKS -150) (PRACTICAL MARKS-100)

- तीनताल, एकताल तथा झपताल में नाच की पूरी तैयारी। इन तालों में कम से कम 15 मिनट बिना बोलों को दोहराये हुये नृत्य प्रदर्शनकरने की क्षमता। तीनताल में एक तालांगी, एक नृत्यांगी, एक कवितांगी तथा एक मिश्रांगी तोड़ों का अभ्यास। तीनताल में तोड़ो द्वाराअतीत तथा अनागत दिखाना।
- तीनताल में घूघँट के प्रकार तथा बंसी व पनघट के गतभाव।
- धमार ताल में 4 ततकार हस्तक सहित, 2ठाट, 1 सलामी, 1 आमद, 5 तोड़े, 2 तिहाईयां, 2 परने तथा 1 चक्करदार परन।
- विभिन्न लयकारियों का ज्ञान। तीनताल में ततकार द्वारा पचगुन तथा आड़ लयों को पैर तथा हाथ से ताली देकर दिखाना।
- तीवरा, चारताल तथा आड़ा चारताल में 2-2 ततकार तथा 2-2 तिहाईयां।
- कोई 2 लोक नृत्य ।
- पिछले वर्षो के सभी ताल तथा रूपक, दीपचन्दी, धुमाली, पंचम सवारी, आड़ा चारताल तालों को हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन, तिगुनतथा चौगुन लयों में बोलना तथा पैर से निकालना।
- यमन बिलावल तथा भैरवी रागों में एक- एक स्वरमलिका गाने का अभ्यास।
- तबला वादन का प्रारंभिक अभ्यास।

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 50)

- निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान मुद्रा, निकास, स्थानक, अदा, घुमरिया, अंचित, कुं चित, रस, भाव, अनुभाव, भंगि- भेंद, तैयारी, अभिनय, पिण्डी, प्रिमलु, स्तुति, विक्षिप्त, हस्तक, कसक, मसक, कटाक्ष, नाज, अंदाज।
- भातखंडे तथा विष्णु दिम्बर ताललिपि पद्धतियों का पूर्ण ज्ञान तथा दोनों की तुलना।
- भारत के शास्त्रीय नृत्य-कथक, कथकली, मणिपुरी, भरतनाट्यम का परिचयात्मक अध्ययन और इनकी तुलना।
- निम्न विषयों का पूर्ण ज्ञान- संयुक्त और असंयुक्त मुद्राएं, नृत्य में भाव का महत्व, प्रचलित गतभावों के कथानकों का अध्ययन, नृत्य सें लाभ, आधुनिक नृत्य की विशेताए।
- पिछले तथा इस वर्ष के समस्त तालों के ठे के , ततकार तथा बोल आदि को विष्णु दिग्म्बर तथा भातखंडे ताललिपियों में विभिन्न लयों में लिखने की क्षमता। ताल के दस प्राणों का ज्ञान।
- व्याख्या- वर्ण, आरोह अवरोह, अलंकार, थाट, राग, सुरावर्त, (स्वरमालिका), लयकारी, लय तथा लयकारी का भेंदा
- यमन, बिलावल तथा भैरवी रागों का पूर्ण परिचय और इनमें सरल गीत गाने की क्षमता।
- रूपक, दीपचन्दी, आड़ा चारताल, धुमाली तथा पंचम सवारी तालों का पूर्ण परिचय।
- वर्तमान समय के किन्हीं दो प्रसिद्ध कथक नृत्यकारों का परिचय तथा उनकी नृत्य शैलियों का तुलनात्मक अध्ययन।
- संगीत तथा नृत्य संबंधी विषयों पर लेख लिखने की क्षमता।

पंचमा(प्रथम) (FIFTH YEAR) (FULL MARKS -200) (PRACTICAL MARKS-125)

- 10 करणों का क्रियाठ्मक रूप से प्रस्तुत करने की क्षमता।
- तीनवात में 25 मिनट तक बिना बोलों को दोहराये धमार में 15 मिनट तक नृत्य करने की क्षमता। भजन तथा ठुमरी गायन पर भाव प्रदर्शित करते हुए नृत्य करने का अभ्यास।
- नये कथानको – जैसे माखन- चौरी, कालिया- दमन, चीर हरण, गौवर्धन- धारण, तथा कथक शैली में तांडव और तास्प अंग के नृत्य का अभ्यास ।
- कोई भी दो प्रादेशिक लोकनृत्य जैसे- गरबा, रास कोती, छपेला, भाँगड़ा, आदि का नृत्य करने की क्षमता।
- अब तक के पाठ्यक्रम में निर्धारित तालों में लहरा (नगमा) बजाने का अभ्यास।
- रूपक, धुमाती, चारतात, दीपचन्दी तथा पंचम सवारी में दो दो ठाट, एक-एक आगद, चार-चार तोड़े. एक-एक चक्करदार तोड़ा तथा चक्करदार परन, दो दो साधारण परने, तीन-तीन तिहाईयां तथा ततकार और उनके पतटे।
- लक्ष्मीतात्, ब्रहातात, जत अद्धा वधा झुमरा वातों को हाथ से ताली देकर ठाह, दुगुन्, तिगुन्, चौगुन तथा आठ्तयों में बोलना तथा पैर से निकालना।
- पाठ्यक्रम में अब तक निर्धारित सभी तात के ठे कों को तबले पर बजाने का अभ्यास। 9. समाज, काफी, तितंग तथा बिहाग रागों में स्वरमतिका गाने की क्षमता

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 75)

- निम्रलिखित शब्दों की परिभाषा तथा व्याख्या। उरप, पुरप, तिरप्, कसक, मसक, कटाक्ष, पूर्घट, उरमई, सुरमई, लाग-डाँट, जाति-परन, पक्षी-परन, बोत-परन, गत- निकास, गत- तोड़ा, गत-भाव, ग्रीमा- भेद, दम- बेदम तथा गति – भेद।
- निम्नलिखित विषयों का अध्ययन- परम्परागत वेश-भूषा, सफल नृत्य प्रदर्शन की आवश्यकतायें, घुंघरुओं का चुनाव, नृत्यकार के गुणअवगुण, नौरसो की पूर्ण व्याख्या और नृत्य में उनका उपयोग; वेष सज्जा (Make up), दृष्टि भेद, नृत्य में दिशाओं का ज्ञान।
- नृत्य के लखनऊ, जयपुर, और बनारस घरानों का तुल्नात्मक और विस्तृत अध्ययन।
- नायक-नायिका भेद का ज्ञान।
- महाराज ठाकु र प्रसाद, महाराज ईश्वरी प्रसाद, शंकर नंबूदरीपाद तथा रूकमणी अरून्डेल की जीवनियों का अध्ययन।
- लक्ष्मीताल, ब्रह्मताल, जत, अद्धा तथा झूमरा तालों का पूर्ण परिचय एवं इन्हें विभिन्न लयकारियों में तातलिपि में तिखने की क्षमता।
- काफी, खमाज, तिलंग तथा बिहाग रागों का पूर्ण परिचय।
- ध्रुपद, धमार, ख्याल, टप्पा, ठुमरी तथा भजन गायन शैलियों का पूर्ण परिचय।
- भारत की अल्प ज्ञात शास्त्रीय नृत्य शैलियां जैसे ओडिसी, कु चिपुड़ी का परिचयात्मक ज्ञान।

पंचमा (पुर्ण) (SIXTH YEAR) (FULL MARKS -200) (PRACTICAL MARKS-175)

- अब तक के सभी तालों में नृत्य प्रदर्शन की विशेष क्षमता। अंगचारी मंडल तथा हस्त मुद्राओं में विशेष सौष्ठव।
- अर्जुनताल, गणेशताल, सरस्वतीताल, रूद्रताल तथा सवारी ताल (दोनों प्रकार 15 तथा 16 मात्राओं की) में से किन्हीं तीनतालों में नृत्य
- करने की क्षमता।
- नेत्र, भ्रू, कण्ठ, कटि, चरण तथा हस्त आदि अंगों के समुचित संचालन की क्षमता।
- दिये गये कथानकों में कथक शेती में नृत्य करने की क्षमता। जयपुर तथा लखनऊ घराने के नृत्य का प्रदर्शन करके अन्तर बताना।
- कु छ तबला तथा पखावज के बोल, तोड़ा, टुकड़ा, परन आदि बजाने का अभ्यास।
- पीलू, झिंझोटी, गाय, बसन्त तथा बहार रागों में एक- एक स्वरमतिका अथवा छोटा ख्याल गाने का अभ्यास। होरी, चैती, कजरी, गजल,
- तराना, भजन इन गायन शैलियों में से किन्हीं दो में गाकर भाव दिखाने का अभ्यास।
- मारीच-वध, मदन- रहन, द्रौपदी चीरहरण, भिलनी भक्ति, पनघट की छेड़छाड़, लक्ष्मण शक्ति, त्रिपुरासुर वध, वामन अवतार, अहिल्या
- उद्धार सती अनुसुइया, कलिया दमन, इन कथानकों में से किन्हीं 5 में गत भाव दिखाने का अभ्यास

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 75)

- कथक नृत्य का विस्तृत इतिहास, विभिन्न कालों में इसकी रूपरेखा तथा इसका अंगीकरण, प्रत्येक काल के नृत्याचार्यों तथा उनकी नृत्य कला का पूर्ण परिचय।
- रंगमंच की रचना का उद्देश्य तथा इतिहास, रंगमंच पर प्रकाश व्यवस्था तथा इसकी आवश्यकता।
- नृत्य में वेशभूषा की आवश्यकता, वेशभूषा और रूप सज्जा में परस्पर संबंध और इस संबंध में आलोचनात्मक विचार।
- लोकनृत्य की विशेताए एवं इसके विभिन्न रूप, कथक एवं लोकनृत्य में परस्पर साम्य एवं भेंद, लोकनृत्य की आवश्यकता एवं इसके आवश्यक अवयव।
- भरतनाट्यम, मणिपुरी, ओडिसी, कु च्चिपुडी एवं कथकली नृत्य का परिचय तथा कथक नृत्य और इन सभी नृत्य में परस्पर साम्य और भेद।
- कु तप अथवा वृन्दावन की व्याख्या तथा इसकी रचना के सिद्धांत, कथक नृत्य में कु तप की आवश्यकता तथा इसका महत्व।
- नृत्य और अभिनय में परस्पर साम्य और भेद तथा इन दोनों की पृथक पृथक विशेषताएं तथा महत्व।
- पाश्चात्य नृत्य का पूर्ण परिचय, इसमें प्रयोग किये जाने वाले विभिन्न करणों और रेंचको का अवलोकन, पाश्चात्य नृत्य और कथक नृत्य में परस्पर साम्य और भेद, बैले नृत्य की रचना के नियम, कथक शैली के बेले की श्रेष्ठता पर अपने विचार।
- आधुनिक नृत्य का पूर्ण परिचय, इसकी वेशभूषा और कु तप, आधुनिक नृत्य का समाज में स्थान, आधुनिक नृत्य की विशेषताएं और और वर्तमान काल में इनकी आवश्यकताएं।
- नृत्य संबंधित विषयों पर निबंध जैसे (अ) नृत्य और जीवन (ब) नृत्य और साहित्य (स) नृत्य और राष्ट्र (द) शिक्षा में नृत्य का स्थान, (च) नृत्य और व्यायाम तथा कथक नृत्य का भविष्य।

पुर्णा (विशारदा) (SEVENTH YEAR) (FULL MARKS -250) (PRACTICAL MARKS-100)

- तीनताल में विशेष योग्यता:- गुरु वंदना, तीन ठाट (तीन अलग Poses), दो आमद (1 सादा, 1 परन जुड़ी), तीन चक्कदार तोड़े जो 4 आवृत्ति से कम के ना हो, तीन परन (1 मिश्र जाति परन आवश्यक), तीन चक्कदार परन, दो कवित्त, तीन गिणती की तिहाई, ततकार में आधी, बराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, अठगुन करना तथा बाँट या चलन का विस्तार करना।
- झपताल:- दो ठाट, एक परन जुड़ी आमद, एक सलामी, तीन सादे तोड़े (तीन आवृत्ति सें अधिक आवर्तनों के हो), दो चक्कदार तोड़े, दो परन, दो चक्कदार परन, एक कवित्त, तीन तिहाई, ततकार की बराबर, दुगुन, चौगुन, तिहाई सहित।
- एकताल:- एक ठाट, एक आमद, दो तोड़ें, एक चक्कदार तोड़ा, एक परन, एक चक्कदार परन, एक तिहाई, ततकार की बराबर, दुगुन, चौगुन, तिहाई सहित।
- तीनताल में:- गतनिकास की विशेषता, झूमर(झूमर-घूंघरू युक्त माथे की बिन्दी जैसा मांग का गहना), कलाई, मटकी उठाने के तीन प्रकार, गतभाव: माखनचोरी, अभिनय पक्ष में- एक भजन अथवा भक्ति रस के आधार पर गीत या पद पर अभिनय (भाव प्रस्तुति)।

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 50)

- प्रारंभिक से प्रवेशिका तक के सभी शब्दों की जानकारी।
- नर्तन के भेंद- नृत्य, नाट्य, नृत्त की परिभाषा।
- लास्य तथा ताण्डव की के वल परिभाषा।
- अभिनय दर्पणानुसार ग्रीवा भेंद (4 प्रकार)।
- अभिनव दर्पणानुसार नौ प्रकार के शिरोभेद।
- लोकनृत्य तथा आधुनिक नृत्य की परिभाषा।
- जीवनियाँ- पं० कालिका प्रसाद, पं० बिन्दादीन महाराज, पं० हरिहर प्रसाद, पं० हनुमान प्रसाद।
- जयपुर तथा लखनऊ घराने की विशेषता।
- संयुक्त हस्तमुद्रांये(अभिनय दर्पणानुसार)। परिभाषा और प्रयोग- अंजली, 2.कपोत, 3. कं कट, 4. स्वास्तिक,5. डोला, 6.पुष्टपुट, 7. उत्संग, 8.
- शिवलिंग,9. कटकावर्धन,10. कर्तरी स्वस्तिक, 11. शकट, 12. शंख।
- तीनताल, झपताल, एकताल के पाठ्यक्रम की रचनाओं को लिपिबद्ध करना।
- गतभाव के प्रसंगों का वर्णन लिखना।
- संत कवि सूरदास तथा मीरा का परिचय।

INTERNSHIP (FULL MARKS - 100)

1. **शिक्षण प्रशिक्षण**

- प्रारंभिक एवं मध्य स्तर के विद्यार्थियों को तत्कार, हस्तक, आमद, तोड़ा, टुकड़ा, चक्कर एवं ताल की शिक्षा देना।

2. **रचना एवं कोरियोग्राफी**

- तीनताल, झपताल एवं एकताल में छोटी कथक रचनाओं की तैयारी एवं समूह प्रस्तुति।

3. **अभिनय एवं भाव कार्य**

- ठुमरी, भजन एवं गतभाव के प्रसंगों का अभ्यास तथा प्रस्तुति।

4. **शोध कार्य**

- कथक घरानों, प्रमुख गुरुओं एवं संत कवियों पर प्रोजेक्ट तैयार करना।

5. **इंटर्नशिप रिकॉर्ड**

- शिक्षण डायरी, अभ्यास विवरण एवं प्रोजेक्ट रिपोर्ट तैयार करना।

कत्थक संपूर्ण (EIGHTH YEAR) (FULL MARKS -250) (PRACTICAL MARKS-100)

- श्रीशिव वंदना अथवा कृ ष्ण वंदना:तीनताल में विशेषताओं सहित- एक उठान, एक ठाट, एक आमद, एक परमेलू, एक नटवरी तोड़ा, एक फरमाइशी चक्रदार(पहली धा पहली, दूसरी धा दूसरी,तथा तीसरी धा तीसरी सम पर), एक गणेश परन, एक ततकार की लड़ी। (तकिट तकिट धिन) रूपक में – एक ठाठ, एक सादा आमद, चार सादे तोड़े, दो चक्रदार तोड़े, दो परन, दो चक्रदार परन, दो तिहाई एक कवित्त। ततकार- बराबर, दुगुन, चौगुन, तिहाई सहित। एकताल में- दो ठाट, एक परन जुड़ी आमद, चार तोड़े, दो चक्कदार तोड़े, दो परन, दो चक्रदार परन, एक कवित्त और तीन तिहाई। ततकारबराबर, दुगुन, तिगुन, चौगुन, तिहाई सहित। सीखें हुये सभी बोलों की ताल देकर पढन्त करना। गतनिकास में विशेषता: रूखसार, छेड़छाड़, आंचल आदि। गतभाव में कालिया दमन। 'होरी' पद पर भाव प्रस्तुति।

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 50)

- कथक नृत्य का मंदिर परम्परा और दरबार परम्परा का संपूर्ण ज्ञान।
  (अ) बनारस घराने की विशेताए।
  (ब) जयपुर, लखनऊ घराने की संपूर्ण परम्परा का ज्ञान (वंश परम्परा सहित)
- भौ संचालन तथा दृष्टि भेंद के प्रकार और उनका प्रयोग (अभिनव दर्पणानुसार)। लास्य तथा ताण्डव की व्याख्या और उनके प्रकार।
- तीनताल के ठे कों को आधी ½, पौनी ¾ , कु आड़ी 1, ¼ आड़ी, ½ डेढी, बिआड़ी 1, ¾ (पौने दो) लय में लिपिबद्ध करना।
  (क) अभिनय की स्पष्ट परिभाषा।
  (ख) आंगिक- अभिनय, वाचिक- अभिनय, आहार्य- अभिनय, सात्विक- अभिनय की व्याख्या तथा प्रयोग।
- संयुक्त हस्त की निम्नलिखित मुद्राओं की परिभाषा तथा प्रयोग: चक्र, सम्पुट, पास, कीलक , मत्स्य, कू र्म, वराह, गरुड़, नागबन्ध, खटवा,भेरूण्ड।
- जीवनियां- पं० अच्छन महाराज, पं० शम्भु महाराज, पं० लच्छू महाराज, पं० नारायण प्रसाद, पं० जयलाल।
- तीनताल, रूपक, तथा एकताल के सभी बोलो की लिपिबद्ध क्रिया।
- कथक नृत्य के अध्ययन की, शारिरिक, मानसिक और बोद्धिक उपयोगिता।

INTERNSHIP (FULL MARKS - 100)

1. **उच्च स्तरीय शिक्षण अभ्यास**
- विद्यार्थियों को कथक की उन्नत तकनीक, ताल, लयकारी एवं नृत्य रचनाओं का प्रशिक्षण देना।

2. **स्वतंत्र कोरियोग्राफी एवं प्रस्तुति**
- तीनताल, झपताल एवं एकताल में उन्नत स्तर की कथक प्रस्तुति तैयार करना।

3. **अभिनय एवं रचनात्मक कार्य**
- ठुमरी, पद, भजन एवं गतभाव में भावाभिव्यक्ति तथा नाट्य प्रस्तुति का अभ्यास।

4. **शोध एवं दस्तावेजीकरण**
- जयपुर एवं लखनऊ घराने, कथक के इतिहास एवं महान कलाकारों पर विस्तृत अध्ययन।

5. **मंच प्रबंधन एवं रिपोर्ट**
- कार्यक्रम आयोजन, रिहर्सल प्रबंधन, मंच संचालन एवं विस्तृत इंटर्नशिप रिपोर्ट तैयार करना।

कत्थक आचार्य (NINETH YEAR) (FULL MARKS -250) (PRACTICAL MARKS-100)

- **शास्त्र प्रथमप्रश्न-पत्र** नाट्य की उत्पत्ति(भरतानुसार), नाट्य का प्रयोग तथा नाट्य का प्रयोजन। नवरसों की परिभाषा। नायक के चार भेंद-धीरोद्धत, धीरललित, धीरोदात्त, धीरप्रशांत। चार प्रकार की नायिका और उनकी परिभाषा, अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका। दशावतार में से मत्स्य, वराह, कू र्म तथा नरसिंह अवतार की कथा तथा उनकी मुद्राएं। ताल के दस प्राणों की व्याख्या। भरतनाट्यम, मणिपुरी तथा कथकली नृत्य की जानकारी। इनकी वेशभूषा तथा वाद्यो का ज्ञान। तीनताल, झपताल, धमार में आमद, बेदम तिहाई, फरमाइशी परन तथा चक्कदार परन, तिपल्ली तथा कवित्त को लिपिबद्ध करना। (अ) गुरु शिष्य परम्परा का महत्व। (ब) शिष्य के गुण तथा गुरु के प्रति उसके कर्तव्य।
- **द्वितीय प्रश्न–पत्र** रस की निष्पत्ति, स्थाई भाव, भाव,विभाव, अनुभाव, व्यभिचारी भाव आदि की परिभाषा। निम्नलिखित पारिभाषिक शब्दों का ज्ञान- तिपल्ली, कवित्त, फरमाइशी परने, कमाली परन, बेदम तिहाई, त्रिभंग, सुढंग, लाग- डाँट, अनुलोम, प्रतिलोम, भ्रमरी, न्यास- विन्यास। कथक नृत्य में प्रयुक्त होने वाले निम्नलिखित गीत प्रकारों की व्याख्या: अष्टपदी, ध्रुपद, ठुमरी, चतुरंग, त्रिवट, तराना, चैती, कजरी, होरी। कथक नृत्य में नवाब वाजिद अली शाह तथा रायगढ़ के महाराज चक्रधर सिंह का योगदान। रासताल 13, धमार14, गजझम्पा15, पंचम सवारी 15 में आमद, तिहाई, तोड़ा, चक्कदार परन तथा कवित्त आदि को लिपिबद्ध करना। जीवनियाँ:- नटराज गोपीकृ ष्ण, कथक साम्राज्ञी सितारा देवी, पंडित दुर्गालाल व गुरु कु न्दनलाल गंगानी। निबन्ध ज्ञान: (1) राम तथा कथक, (2) ठुमरी का कथक नृत्य सें सम्बन्ध। नर्तक/नर्तकी के गुण और दोष।

VIVA AND THEORY (FULL MARK - 50)

- सरस्वती वंदना।
- तीनताल के अतिरिक्त झपताल में विशेष तैयारी।
- गजझम्पा या छोटी सवारी (पंचम सवारी) तथा रास और धमार में ठे के की ठाह,दुगुन, ठाठ, आमद, दो तोड़े, एक परन तथा एक कवित्त का प्रदर्शन।
- गतनिकास; आंचल, नाव , घूघँट के प्रकार। गतभाव: पिछले वर्षो के सभी गतभावों का प्रदर्शन तथा द्रौपदी चीरहरण।
- ठुमरी भाव(शब्द, राग, ताल की जानकारी आवश्यक)।
- एक तराना या त्रिवट किसी ताल में। हाथ से ताली लगाकर सभी बोलों की पढन्त।
- अभिसारिका, खण्डिता, विप्रलब्धा तथा प्रोषितपतिका नायिका पर गतभाव या इनसे संबंधित पद या ठुमरी पर भाव नृत्य।
- तीनताल या झपताल की ततकार में लड़ी या चलन।
- अभिनय दर्पण का श्लोक "आंगिक भुवन यस्य"।
- पिछले संत कवियों को छोड़कर अन्य किन्हीं दो संत कवियों के कविता या भजन पर भाव दिखाना तथा दोनों संत कवियों का परिचय देना।

INTERNSHIP (FULL MARKS - 100)

1. **स्वतंत्र शिक्षण एवं प्रशिक्षण**

- कथक की विभिन्न शैलियों एवं उन्नत तकनीकों का स्वतंत्र रूप से शिक्षण एवं विद्यार्थियों का मूल्यांकन।

2. **पूर्ण नृत्य प्रस्तुति एवं निर्देशन**

- एकल या समूह कथक नृत्य नाटिका/प्रोडक्शन की योजना, कोरियोग्राफी एवं निर्देशन।

3. **उच्च स्तरीय अभिनय एवं शोध कार्य**

- गतभाव, ठुमरी, भजन, कवित्त एवं भाव पक्ष पर आधारित शोध एवं प्रस्तुति।

4. **व्यावसायिक मंच एवं आयोजन प्रबंधन**

- संगीत संयोजन, वेशभूषा, मंच सज्जा, कलाकार समन्वय एवं कार्यक्रम संचालन।

5. **अंतिम प्रोजेक्ट एवं पोर्टफोलियो**

- शोध रिपोर्ट, शिक्षण अनुभव, कोरियोग्राफी विवरण, प्रदर्शन रिकॉर्ड एवं अंतिम इंटर्नशिप प्रस्तुति।